

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१८/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में बैठे... सभी अपनी मूलस्वरूप अवस्था को देखें ...देखिए अपना मूलस्वरूप... चमकता हुआ सितारा... ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी के बीच में.. आत्मा का सिंहासन है.. उस पर आत्मा अपनी मूलस्वरूप स्थिति में सत्य स्वरूप स्थिति में बैठी है... देखिए आपका मूलस्वरूप... अनुभव करें मूलस्वरूप अवस्था को... उसे स्पष्टता से देखने का प्रयास करें... चमकता हुआ सितारा... जिससे लाइट और माइट निकल रही है... जिससे सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियां चलती हैं... देखिए अपना मूल स्वरूप...

इस समय संगम युग के समय आत्माओं को अपनी इस मूलस्वरूप अवस्था को प्राप्त करना होगा। यही वह अवस्था है जिसमें सारी प्राप्ति है। हर रूप से हर प्रकार से सभी सुख इसी ही अवस्था में है। आत्मा को सबसे बड़ा खुद का ज्ञान मिला है अपनी मूलस्वरूप अवस्था में आने का। आने वाले कल्प में अगर आत्माओं को अपना बेस्ट पार्ट बजाना है तो सबसे पहले आत्माओं को सिर्फ मूलस्वरूप में आने का अभ्यास करना होगा। आध्यात्मिक मार्ग पर आने के बाद चलने के बाद आत्माओं को यह सदा ज्ञात रहे कि आप इस मार्ग पर क्यों आए हो। अब आप आपके परिवर्तन के लिए आप आपके आने वाले अगले कल्प के बेस्ट पार्ट के लिए आपको आपका परिवर्तन करना होगा सिर्फ और सिर्फ इस ही एक उद्देश्य है कि आप आत्माएं इस मार्ग पर चल पड़े हो। इस मार्ग पर आने के लिए आपका उद्देश्य संपूर्ण शुद्ध होना जरूरी है। हर कोई अपनी चेकिंग करें कि आप इस मार्ग पर क्यों आए या जब भी कभी आपको यह आध्यात्मिक मार्ग मिला सबसे पहले आपका इस मार्ग पर चलने के पीछे का उद्देश्य क्या था? क्या कोई संसारी दुखों से परेशान था, या परिस्थिति वश कष्ट में जीवन जा रही थी उससे बाहर निकलने के

लिए यह रास्ता चुना था, किसी भी प्रकार की मानसिक परेशानी थी, या किसी प्रकार की आर्थिक पारिवारिक या कोई सामाजिक परिस्थिति थी, जिस कारण आपको यह मार्ग अच्छा लगा, या आपके स्वयं के कोई और संकल्प थे, आपकी खुद की कोई परिस्थिति थी जो इस मार्ग पर आप चल पड़े। इनमें से आप आत्माओं का क्या उद्देश्य था इस राह पर चलने के पीछे चेक करें। हर कोई चेक करें, क्या आपको परमात्मा से मिलना था? क्या आपको समर्पित होना था? क्या आपको कोई सेवाएं करनी थी? क्या आपको सेवाएं करते कोई नाम, मान, शान, पद, पोजीशन व्यवस्था चाहिए थी? हर कोई चेक करें आप इस मार्ग पर क्यों जुड़े हो?

आप सबका जुड़ने का जो भी कारण होगा सबसे पहले वह कारण को वह जो बीज है उसे शुद्ध होना होगा। जब तक आपका इस मार्ग के ऊपर चलने के पीछे का उद्देश्य शुद्ध नहीं होगा तब तक आप आत्मा का परिवर्तन कभी भी नहीं हो सकता, यह एक अटल सत्य है। आप इसे स्वीकार करो या ना करो। बीज हर बात का सदा शुद्ध होना जरूरी है। इस मार्ग के पीछे चलने का उद्देश्य अगर कोई आत्मा का स्वयं का कल्याण करने का होगा, स्वयं के संपूर्ण परिवर्तन करने का होगा तो ही वह बीज संपूर्ण शुद्ध है।

हर कोई आज अपने बीज की चेकिंग करना कि आप सभी इस मार्ग पर क्यों चल पड़े थे? इतने सालों में आपने इस मार्ग पर चलकर आपके अंदर क्या परिवर्तन को पाया है? बाहरी किसी बातों का त्याग करना इसे परिवर्तन नहीं कहा जाता। बाहरी बातों का त्याग कोई भी कर सकता है। सबसे पहला त्याग एक है बॉडी कॉन्शियसनेस का। बाहरी किसी वस्तु का, पदार्थ का, खानपान का त्याग करने के बाद भी अगर आपका व्यवहार बॉडी कॉन्शियसनेस का ही होगा तो आपके अंदर किसी भी रूप से किसी भी प्रकार से कोई भी परसेंटेज में परिवर्तन नहीं आया है। आपने इतने साल इस ज्ञान मार्ग पर चलकर आपका समय व्यर्थ गवाया है। संसार में कोई सन्यास मार्ग पर चल पड़ते हैं। कुछ वर्षों में उनके पास तपस्या से कोई सिद्धियां आती हैं। वह है उनका उनके जीवन का एक लक्ष्य। पर क्या इस ज्ञान मार्ग पर चलकर किसी ने अपने परिवर्तन का लक्ष्य तय किया है? मुझे इतने समय में इन इन बातों में परिवर्तन

होना है। क्या कभी उस परिवर्तन के लिए दिल से सच्चा प्रयास किया है? अगर इस ज्ञान मार्ग पर चलकर अभी भी कोई उदास नाराज डिस्टर्ब रहता है फिर वह एक सेकंड के लिए भी क्यों ना हो फिर भी उस अस्तित्व के अंदर एक परसेंट भी परिवर्तन नहीं हुआ है। परिवर्तन माना क्या जो विपरीत संस्कार जिससे आप स्वयं भी परेशान हो और दूसरे भी परेशान होते हैं। ऐसा संस्कार उसका संपूर्ण त्याग उसकी संपूर्ण विस्मृति वह हुआ उस संस्कार के प्रति का परिवर्तन।

हर कोई अपनी चेकिंग करें। हमारे अंदर इतने समय से कौन से संस्कार का संपूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ है? हर कोई अपनी चेकिंग जरूर करें। अगर आपका किसी भी संस्कार में कोई एक भी संस्कार क्यों ना हो उसमें भी अगर परिवर्तन नहीं हुआ होगा तो आपको विचार करना चाहिए कि आप इस मार्ग पर क्या कर रहे हो? सिर्फ बाहरी धारणा में पालन करके खानपान की धारणाओं का कुछ धारणाओं का त्याग करके ऐसे ही दिन भर चले इससे क्या होगा? आपका परिवर्तन करने के लिए कौन आएगा? किसी स्कूल में टीचर्स बच्चों को पढ़ाते हैं। पांच, छह, सात घंटों की स्कूल होगी। उसमें टीचर्स अपना संपूर्ण प्रयास करते हैं। उन स्टूडेंट को पढ़ाने का, सिखाने का, उनको कामयाब बनाने का, पर उसमें से कौन बन पाते हैं? जो स्वयं की पढ़ाई के लिए गंभीर होते हैं। जिनको दिल से लगता है कि मुझे पढ़ना है, मुझे बनना है। और जो दिल से सदा अपने पढ़ाई पर ध्यान रखते हैं। कहीं पर भी कोई भी बातों में अपना समय व्यर्थ नहीं गवाते। उनका ध्यान सदैव अपनी पढ़ाई पर रहता है। ऐसे ही बच्चे उनके जीवन में कामयाब होते हैं। यह हुई सांसारिक पढ़ाई पर इस ज्ञान युग में कौन कामयाब होगा? कौन परिवर्तित होगा? जिसने अपनी पढ़ाई की है, कर रहे हैं और अंत तक वह अपना परिवर्तन करते रहेंगे। ऐसी ही आत्माएं अपना संपूर्ण कल्याण कर पाएंगी। बाहरी रूप के कोई धारणाओं को पालन करके या बाहरी रूप से सेवाएं करके, फिर वह किसी भी प्रकार की सेवाएं हो, क्या यह सब करके आत्मा का कल्याण होगा? आत्मा का परिवर्तन होगा क्या? यह सवाल हर कोई अपने से पूछना। आपके पास रोज 24 घंटे मिलते हैं आपको आपके परिवर्तन के लिए। तो हर कोई चेक करना इन 24 घंटों में आज के दिन में मुझ

आत्मा ने मेरे अंदर कौन सा परिवर्तन लाया है? फिर उस परिवर्तन की मात्रा अंशता हो या बड़े पैमाने पर हो पर हर कोई अवश्य चेक करें। आज मेरे अंदर मैंने क्या परिवर्तन पाया है?

परमात्मा तो अपना कार्य कर ही रहे हैं। पर आत्माएं अपने परिवर्तन के लिए कितना जागृत हुए हैं यह हर कोई चेक करें। आपकी जो अवस्था अंत तक बनेगी उस अवस्था को लेकर ही अगले कल्प का आपका संपूर्ण रूप से पार्ट रचा जाएगा। वह सब कुछ आप ही के हाथों में है। नई सृष्टि की स्थापना करना, सतयुग लाना सारी नई रचना बनाना यह परमात्मा का कार्य है। पर उस नई रचना में पार्ट बजाने का अधिकार किसके पास होगा? जो आत्माएं अपना संपूर्ण कल्याण और परिवर्तन कर चुकी होगी वह भी इस ही संगम युग में। तो हर कोई अपने रोज की अवस्था को अवश्य चेक करें।

इस ज्ञान मार्ग पर चलते दिन पर दिन बीतते जा रहे हैं, मास पर मास बीतते जा रहे हैं, सालों साल चले जा रहे हैं पर इसमें क्या परिवर्तन को पाया है? हर कोई चेक करें। हर आत्मा आप जो जो पुरुषार्थ करते हो फिर आत्मिक स्थिति का अभ्यास हो, याद का पुरुषार्थ हो, सकाश का पुरुषार्थ, या कोई आत्मा से संबंधित अभ्यास करने का पुरुषार्थ, हर पुरुषार्थ के बाद हर आत्मा अवश्य चेक करें कि यह करने के बाद मेरे अंदर क्या परिवर्तन हुआ है। मेरे मन बुद्धि संस्कारों में क्या बदलाव हुआ है? मेरे व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ है? मेरे विचारों में क्या परिवर्तन हुआ है? हर कोई हर पुरुषार्थ के बाद अपनी चेकिंग अवश्य करें। फिर वह पुरुषार्थ कोई 10 मिनट करें, एक घंटा करें, चार घंटा करें, 8 घंटा करें पर वह करने के बाद हर कोई अपना कॉन्शियसनेस चेक करें कि क्या कुछ बदलाव हुआ है? परमात्मा ने जो जो अभ्यास दिए हैं उस सभी में संपूर्ण परिवर्तन होने का सहज रास्ता है पर हर कोई उसे उस विधि से और दिल से करें तो हर कोई अपने अंदर उस परिवर्तन को पाएगा।

आज के दिन में सभी आत्माएं अपनी चेकिंग करें। जब से इस ज्ञान मार्ग पर चल रहे हो तब से लेकर अब तक आपने आपके अंदर क्या क्या परिवर्तन किया है और क्या कुछ परिवर्तन किया होगा? क्या वह पर्याप्त है? हर कोई चेक करें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः